हज का दर्शन

सफ़वतुल उलमा मौलाना सैय्यद कल्बे आबिद नकवी रहमत मआब

जब से ज़मीन पर इंसान का पता चलता है। स्थानान्तरण और यात्राओं का सिलसिला भी चल रहा है। कभी जनसंख्या की बढ़ोत्तरी से किसी भूखंण्ड के भौतिक साधन माद्दी वसायल कम दिखे तो लोग झुंण्ड के झुंण्ड बनाकर ज़िन्दगी की आवश्यक चीज़ों की खोज में घरों को छोड़कर निकल खड़े हुए। कभी बलशाली क़बीलों ने दुर्बल क़बीलों को घर छोड़ने पर विवश कर दिया। कभी व्यावसायिक सामग्री से, (तिजारती सामान) से लेदे फंदे यात्री दल कारवाँ दर कारवाँ मिले। कभी यात्रा का उद्देश्य सैर सपाटा और मनोरंजन हुआ कभी कुछ अनुसन्धान प्रिय लोग स्वाभाविक खोज और फ़ितरी जुस्तजू एवम जिज्ञासा के अन्तर्गत यात्रा की कठिनाइयाँ झेलते दिखाई दिए।

मगर उपरोक्त सभी उद्देश्यों से अलग झुंण्ड के झूंण्ड कारवाँ के कारवाँ यात्रा दलों का एक और सिलसिला मिलता है जो हजारों साल से सफ़र करते रहते हैं उनके दृष्टिगत न पर्यटन है न जिज्ञासा न अनुसंन्धान। ये लोग वतन यानी स्वदेश से निकाले हुए हैं और न इन्हें किसी उर्वरा भूमि या जरखेज़ ज़मीन की तलाश है। इनका उद्देश्य और गन्तब्य स्थान यानी कि मंज़िले मक़सद एक सहारा है जहाँ न हरियाली थी न पानी, सिर्फ चटियल मैदान (एक पथरीली भूमि) जहां भौतिक लाभ के न जियादा इमकान हैं न देखने योग्य महल और इमारतें और न साँसारिक लाभ की सम्भावना है न घास के आनन्ददायी मैदान। बस एक उलूल अज्म पैग़म्बर का बिना वाणी का संदेश बापों की पीठ और माताओं के गर्भाशय में बसने वालों तक पहुंचा था और उनकी आत्माओं ने ''लब्बैक'' कही थी यानी तत्परता सूचक इक़रार किया था। यह वह लोग हैं जिनमें से कुछ पैदल कुछ सवारियों पर उस वचन को पूरा करने के लिए प्रत्येक प्रकार के कष्ट उठा के आए हैं जैसा कि कुरआन मजीद में जनाब ''इब्राहीम पैग़म्बर को हुक्म दिया जा रहा है।

''ऐ मेरे निश्छल बन्दो! तुम बाप बेटों ने मिल के मेरा घर तो बना दिया तो अब ऐ! इब्राहीम! लोगों में ''हज का ऐलान भी कर दो। लोग गहरे रास्तों से पैदल और छरहरी ऊंटनियों पर ''लब्बैक'' कहते हुए दौड़े आएंगे''।[1]

कुछ लोगों के मन में ये बात आती होगी कि अल्लाह को अपना घर बनवाना था तो किसी आनन्दायक स्थान हरी भरी घाटी में बनवाया होता, हज का हज हो जाता और मनोरंजन का मनोरंजन रहता। इसका जवाब हज़रत अली अमीरूल मोमिनीन के द्वारा सुनिए।

क्या तुम नहीं देखते कि अल्लाह ने सभी झगड़ों का, जनाबे आदम का क़यामत तक इम्तिहान लिया, ऐसे पत्थरों के माध्यम से जो न किसी को हानि पहुंचा सकते हैं न लाभ तो उसको अपना पुनीत घर बताया अमीरूल मोमिनीन ईमान वालों के सरदार के इस शुभ कथन से दो चीज़ मालूम होती हैं। एक तो यह कि हज का हुक्म जनाबे आदम के ही जमाने से क़ायम है और काबा ऐसी जगह बनवाया जहाँ अल्लाह की इताअत (आज्ञा पालन) के अतिरिक्त कोई अन्य उद्देश्य न हो। मन, नीयत, क्रिया सभी शुद्ध हों दृष्टि केवल अल्लाह की मर्जी पर हो।[2]

अब जब हर तरह की सुविधांए हैं, अच्छे–अच्छे

बाइसवां सूरा अल–हज, आयत 27
नहुजुल बलाग़ा खुत्बा नम्बर 190

होटल ठहरने के लिए हैं, और पैसा हो तो आराम की प्रत्येक वस्तु मिल जाती है फिर भी हज करने वालों से पूछिए कि लाखों की भीड़ में क्या गुजरती है और फिर सोचिए कि पहाड़ों पर, मरूस्थलों पर, वनों खतरनाक दर्रों और घाटियों का सफर जब पैदल ऊंटों लुटेरों और अनुकूल मौसमों का मुक़ाबला करके अगर किसी तरह जिन्दा बच जाए तो कुछ कच्चे भवनों और एक बेगढ़े, तरशे पत्थरों से बनाए हुए वर्गाकार भवन के दर्शन के लिए आने वाले आते होंगे तो उनके दिल में अल्लाह की प्रसन्नता और पैग़म्बर के निर्देश के अनुपालन और जनाब इब्राहीम (अ०) की उदघोषणा पर ''लब्बैक'' यानी हम तत्पर हैं और उपस्थित हैं कह के परलोक के लाभ के अलावा और अपनी कौन सी भलाई दृष्टिगत होती होगी।

और हथेली पर जान रख कर इन सफर करने वालों का जब मस्जिदुल हराम और काबे का पवित्र भवन कामनाओं और मनोरथों का केन्द्र बन कर दिखायी पड़ता होगा तो उनके उबलते हुए श्रद्धा भाव और हृदय स्वच्छता जज़्ब–ए–अकीदत व इख्लास का प्रतीक बनकर गालों पर बहते हुए आंसू में पाखंण्ड का कोई छोटा अंश भी आता होगा। इसी लिए हज़रत अमीरुल मोमेनीन फरमाते हैं :–

''अगर पाक परवदिगार यह चाहता कि अपनी पुनीत और महिमामयी उपासना स्थलों की वाटिकाओं नहरों और समतल ज़मीन मेवादार घने बागों हरे भरे मैदानों ओर लहराते खेतों में जहां इमारतें एक दूसरे से करीब और रास्ते में आबादियाँ पास–पास होते तो उसके आदेश के अनुपालन में कितनी कम असुविधा होती उसी के लिहाज़ से सबाब भी (पुण्य भी) कम हो जाता, क्योंकि ''प्रतिकार मशक्कत के अनुपात में होता है।[1]

एक सवाल यह उठता है कि क्या हज अनिवार्य (वाजिब) करने का मक़सद बस ये परखना था कि कौन आज्ञा पालन करता है और कौन अवज्ञा। इसमें कोई संन्देह नहीं कि ईश्वर के आदेशों का अनुपालन आज्ञाकारी के लिए और इस नीयत से कि मेरे मालिक और पूज्य का आदेश है। परलोक में प्रतिकार और पुण्य का हक़ देता है और यही स्थिति हज की भी है।

लेकिन क्या परलोक के पुण्य और प्रतिकार के अलावा भी इसमें कुछ भलाइयाँ हैं। और कोई दर्शन (फलसफा) इसमें पाया जाता है या नहीं। इस पर विचार के पहले दो मौलिक बातों को तय करना होगा।

1–क्या कोई चीज़ अपने आप में बज़ाते खुद अच्छी या बुरी होती है ''हुस्न–व–कुब्ह–ए–अश्या''यानी चीज़ो के गुण तथा दोष की अपनी जगह पर कोई हैसियत नहीं। या बस जो अल्लाह ने कह दिया वो अच्छा है और जिसे रोक दिया बुरा है।

फैसला यह करना है कि अल्लाह ने किसी चीज़ के अच्छे होने के कारण उससे रोका है या ऐसा है कि अल्लाह के आदेश से पहले न कोई चीज़ अच्छी थी न बुरी, जिसका आदेश दे दिया अच्छी हो गई जिस बात को रोक दिया वह बुरी हो गयी।

2–बल्कि सबसे पहले यह फैसला करना होगा कि अल्लाह के आदेशों का कोई हेतु और उद्देश्य (मकसद) होता भी है या नहीं जो चाहता है कर देता है और जिस बात के लिए हुक्म दे देता है अल्लाह को दूसरों से पुछताछ के लिए अधिकार हैं किसी को उससे इस सवाल का क्या अधिकार है कि क्यूँ किया और क्यूँ नहीं किया।[2]

अथवा इसका मतलब यह है कि निश्चय ही जो चाहता है करता है लेकिन करता वही है जो मसलहतों के मुताबिक अर्थात मनुष्य का हित और भला होता है। निश्चय ही अल्लाह से किसी को पूछताछ का अधिकार नहीं, सब उसके द्वारा

———————————

(1)नहजुल बलाग़ा खुतबा नम्बर 190

(2) इक्सवां सूरा अल–अंबिया आयत 23

शासित और अधीन हैं। लेकिन अपनी जगह पर उसकी कथनी और करनी में एतराज़ या आपत्ति की गुंजाइश भी नहीं होती न इसकी रचना में कोई दोष या गड़बड़ी है, और न धर्म विधि बनाने में कोई कमी।

सूविश्वास यानी खुशअक़ीदगी की तो मांग यही है कि तौबा–तौबा अल्लाह के हुक्म से हटकर कोई अच्छाई या बुराई क्या होगी, मगर अब इसको क्या किया जाए कि वो खुद कहता।

"निसन्देह अल्लाह न्याय और भलाई करने और नातेदारों को उनका हक़ देने का हुक्म देता है और अश्लील कर्म और बुराई के लिए सरकशी से रोकता है वह तुम्हें सदुोपदेश देता है ताकि तुम ध्यान दो। [1] तो पता चला कि कोई अच्छाई बुराई है जिसके अनुसार अल्लाह के आदेश होते हैं।

क्या तुमने समझाा कि हमने तुम्हें व्यर्थ पैदा किया है।"[2] यानी निरूद्देश्य और व्यर्थ काम करना दोष है। क्या तुमने अल्लाह की तरफ किसी दोषित और आपत्तिजनक बात निस्बत देते हो यानी यह मानते हो कि उसने ऐसा किया।

और तम्हारे परवदिगार की बातें सच्चाई और इंसाफ में पूरी है।[3] तो नतीजा यह निकला कि कुछ सच्चाई और न्याय के मापदण्ड हैं जिन पर अल्लाह की बातें पूरी उतरती हैं।

कुरआन की उपरोक्त आयतों और इनके अलावा बहुत सी विवेक सम्मत या परम्परागत और अनुहार पर आधारित तर्कों से ये सिद्ध है कि चीज़ों में अपने आप के गुण दोष होते हैं और अल्लाह ने धार्मिक विधि के विधायन में इसी का लिहाज़ रखा है और यही भलाइयाँ, बुराइयाँ अल्लाह के आदेश और मनाही के यानी निषेध के आधार हैं। चुनांचे नमाज़ के लिए इरशाद है।

"निश्चय ही नमाज़ अश्लीलता और बुरे कर्म से रोकती है।"[1]दिन में पांच मरतबा अल्लाह के दरबार में उपस्थिति इतनी मरतबा उससे गुप्त संवाद, क्षमा याचना, दया याचना उसकी कल्पना को मन में ताजा करना आदमी के मानस में ऐसी पवित्रता पैदा करती है कि यदि अभ्यास के वशीभूत न हों, तो पांच वक्त की नमाज़ में प्रत्येक बुराई के लिए अंकुश है।

"तुम पर रोज़ा फर्ज़ किया गया, जिस तरह से पहले के लोगों पर फर्ज किया गया था, ताकि तुम तुम परहेज़ बन जाओ[2] अल्लाह से डरने के लिए जिसे आसानी के लिए "तक़वा" भी कहते हैं यह आवश्यक है कि मनोकामना पर अधिकार और भावनाओं पर अधिपत्य प्राप्त किया जाये और रोजे यही गुण और क्षमता पैदा करने के माध्यम हैं।

"जो कुछ फे" यानी ईश्वर के नकारने वालों से लड़े भिड़े जो माल मिल जाये वो अल्लाह का हक़ है और रसूल का और रसूल के नाते दारों का और यतीमों और मोहताजों और मुसाफिरों का है ताकि वो माल तुम्हारे (धनियों) के बीच ही चक्कर काटता न रह जाये।"[3]

जब यह पता चला कि ईश्वर के आदेशों और उसके द्वारा अनिवार्य किये गये कर्तव्यों में परलोक मे पुण्य के अलावा मनुष्य के भले को भी सामने रखा गया है। तो अब यह देखा जाये कि हज सरीखे मशक्कत भरे आदेश में जिसको अपने बन्दों पर दया और अनुकम्पा के कारणों सारे जीवन में एक मर्तबा वाजिब या अनिवार्य किया गया है क्या भलाईयाँ हैं।

यक़ीनन 'तालील–बाद–र–वरूद" की अनुमति दी गयी है। मतलब यह हुआ कि जब कोई अल्लाह की तरफ से आदेश हो और उसके फायदे न बताये गये हों तो हम को छूट है, इस बात की अनुमति है कि हम अपने ढ़ंग से सोचें कि इस हुक्म में क्या–क्या भलाईयाँ और

(1) सोलहवां सूरा अल–नहल, आयत 10 इसका उच्चारण अननह,ल होता है।

(2) तेईसवां सूरा अल–मोमेनून, आयत 90

(3) छटा सूरा अल–अनआम, आयत 116

(1)उनतीसवां सूरा अल–अनकबूत आयत 45

(2)दूसरा सूरा अल–बकरा, आयत 183

(3) चौबीसवां सूरा अल–हर्श, आयत 7

युक्तियां हों सकती हैं। मगर अपनी बुद्धि की काट दिखाने से यह अच्छा है कि इसी की खोज की जाए कि खुद अल्लाह ने इस कर्तव्य के क्या गुण गिनाए हैं।

हज के फर्ज या बाध्यकारी कर्तव्य होने के लिए कुरआन में साफ आयत है। लोगों पर अल्लाह का हक है कि जो वहां तक पहुंचने की सामर्थ्य रखते हैं उस घर का हज करें।''इस घर का परिचय इस तरह कराया गया है ''निसन्देह पहला घर जो लोगों के लिए बनाया गया है वही जो मक्का में है। ''जिसे हमने लोगों के लिए बनाया है मक्के में रहने वाले और बाहर से आने वाले दोनों समान हैं।(1)

उपरोक्त दोनों आयतों में ''लिल–नास(2) कहा गया है अरबी में अधिकतर लाम जिस शब्द पर लगाया जाता है वो या तो 'तम्लीक' यानी स्वामित्व और उत्तराधिकार का अर्थ देता है या लाभ का। यहां स्वामित्व वाला अर्थ लगााना तो सम्भव नहीं अतः फायदे से अभिप्राय है। अर्थात इस घर का निर्माण लोगों के फायदे के लिए (लाभ के लिए) है। अगर ये सवाल हो कि इस घर से क्या लाभ हो सकता है! क्या फायदा हासिल किया जा सकता है! तो इसका जवाब कुरआन देता है कि ''यह जो मक्के का घर है इसमें सभी संसार वालों के लिए पथ निर्देश है (हिदायत) है। इसमें रोशन ऊँचाइयाँ हैं जिनमें से इब्राहीम का स्थान जी देखेगा तो वो सोचेगा कि इब्राहीम वही तो जिनका जन्म नमरूद के शासन काल में बाबुल में हुआ। और जिनका मज़ार फिलिस्तीन के नगर 'अलखलील' में है।

और यादगारें दोनो जगहों से दूर मक्के की पावन भूमि पर है। आज से हजारों साल पहले यातायात के इतने साधन सुलभ न थे तो हजरत इब्राहीम ने क्यों इतने सुदूर स्थानों की यात्रांए की। मनुष्य का जिज्ञासु स्वाभाव जब इस गुत्थी को सुलझाने के लिए इतिहास के पन्ने पलटेगा तो कभी जनाब इब्राहीम और नमरूद का टकराव और नमरूद का अंजाम। फिर सत्य धर्म का प्रचार और तौहीद के सन्देश के प्रसार के लिए इस ''उलुल अज्म पैग़म्बर(1) के सदुर स्थानों के सफर, वचन पालन के लिए चहीते बेटे और वफादार धर्मपत्नी की अल्लाह के भरोसे ऐसे वन में जहां पानी न हरियाली का नाम निशान ''छोड़ना फिर अपने मालिक के इशारे पर चहीते पुत्र को छुरी की धार के नीचे लिटाना इस महान बलिदान के मौके पर भी बूढ़े बाप के चित्त की शान्ति कि न माथे पर बल और न हाथ में कम्पन और साथ ही साथ किशोर बच्चे का ज़िब्ह होने के लिए इस तरह तैयार होना कि चेहरे पर न भय की ज़र्दी और न ज़बान पर गिले शिकवे के शब्द।

यह तो एक निशानी थी परन्तु कुरआन मजीद ने ''आयाते बैयनात'' बहुत सी स्पष्ट निशानियों का ज़िक्र किया है। इनमें निशानी यह भी है कि तूफान आये कितने जलज़लों के झटकों ने बड़े–बड़े प्रसादों को जड़ (बुनियाद) से उखाड़ फेंका ''मिटे नामियों के निशाँ कैसे–कैसे''परन्तु अल्लाह के दो निष्कपट शुद्ध हृदय बन्दों ने हृदय की शद्धता की सुदृढ़ नींव पर पाक और साफ संकल्प के मज़बूत मसाले से कुछ पत्थरों को जोड़ बटोर कर जो मकान बना दिया था वह घटनाओं के थपेड़ों से आज भी सुरक्षित बना हुआ है। एक निरंकुश अत्याचारी बादशाह ने धूम धड़ाके के साथ इस सदा सी इमारत के मुक़ाबले पर आलीशान उपासना स्थल बनवा कर धन और वैभव के बलबूते लोगों के ध्यान और श्रद्धा का आकृष्ट करना चाहा परन्तु असफल रहकर झुंझलाहट में अल्लाह का घर ढाने के इरादे से बड़ी वैभवपूर्ण जबरदस्त पलटन लेकर चला जिसके आगे–आगे झूमते हुए हाथियों का दस्ता था। मगर नतीजा क्या हुआ यह कुरआन के ''सुरे फील'' पंजों और ढोरों से

(1) तीसरा सूरा आल इमरान, आयत 96,97

(2) इसका उच्चारण लिन्नास होता हैं

(1) उलुल्अज़्म पैग़म्बर हैं जो शरीअत अर्थात धर्म विधि ले के भेजे गए।

गिरने वाली छोटी–छोटी बकरियों ने पूरी पलटन को कुरआन के शब्दों में चबा हुआ भूसा बना दिया।[14]

जब इतिहास के पन्ने कुछ और पलटे गये तो इसी मक्के की पुनीत गलियाँ "लाइलाहा इल्लाह मोहम्मद्न रसूलल्लाह" अल्लाह के सिवा कोई और खुदा नहीं और हज़रत मोहम्मद अल्लाह के पैग़म्बर हैं (दूत हैं) की आवाज से गूंज रही है। एक पुनीता और सदाचार की मूर्ति सुशीलता की पराकाष्ठा का दर्पण जिसकी प्रशंसा हर एक मुखार पर थी जिसको सादिक और अमीन यात्री सच्चा और अमानतदार कहते लोगों की ज़बानें नहीं थकती थीं "कूलूलाइलाहा इल्लल्लाहा" तुफलिहू यानी कहो कि हां अल्लाह बस एक है भला होगा" कहने के अपराध में पत्थरबारी से लहूलुहान धृष्टताओं और दुरालाप का केन्द्र बना हुआ था। कोई जादूगर कह रहा था कोई इन्द्रजालिक कह रहा था। बरसों के शिक्षा प्रसार का फल कुछ नवयुवक, कुछ फटे हाल लोग और कुछ गुलाम (दास) कि जो असहनीय अत्याचार का निशाना था अन्तत जिनको नगर त्याग कर सुदूर नगरों की तरफ हिजरत करनी पड़ी (प्रस्थान करना पड़ा) फिर इस सहनशीलता की प्रतिमा को अपने बिछौने अपने चहीते भाई को सुला कर स्वेदेश छोड़ना पड़ा। लेकिन रात की अंधियारी में मक्का छोड़कर ग़ारों अर्थात कन्दराओं में रहने वाला थोड़े ही दिनों के बाद दिन के उजालों में इसी मक्के में जबरदस्त सेना के साथ विजेता के रूप में प्रवेश करते दिखता है। और वो "बिलाल जो जलती रेत पर दहकते पत्थर के नीचे दबे हुए "अहद–अहद" यकता–यकता कह रहे थे। अब काबे की ऊंचाई से अल्लाहो अकबर, अश्हदो अन ला ला इलाहा इल्लल्लाहो मोहदन रसूलुल्लाह" का जयघोष करते हुए नज़र आये। क्या यह निशानियाँ संसार वालों के लिए हिदायत यानी सही राय पाने का माध्यम नहीं । सत्य के मुकाबले में असत्य लाख बलशाली हो लेकिन डर सहम कर असत्य के सामने सर न झुकाया, नमरूद की सलतनत के मुक़ाबले में जनाब इब्राहीम के पास कितनी सेना थी। हाथियों के दल से अबाबील की क्या तुलना थी। इस्लाम के पैग़म्बर जिनके मुक़ाबले अनीश्वरवाद औ अनेकेश्वरवाद की सभी शक्तियाँ सिमट आयी थीं, सफलता की क्या सम्भावना थी। परन्तु ईश्वर का वादा कितना सच्चा है सत्यवादी है सत्य का सर ऊंचा है सत्य का सर ऊंचा ही रहता है उस पर कोई भी विजयी नहीं हा सकता। बशर्ते कि सत्यवादी जमें रहें और प्रत्येक बलिदान के लिए तैयार रहें चाहे वो जनाब इस्माईल सरीखे प्यारे और चहीते पुत्र की कुर्बानी ही क्यों न हो।

"फिर अपना मैल कुचैल दूर करें"[15]। यह मैल कुचैल चाहे शरीर की हो चाहे आत्मा की हो। संस्कार खत्म हो तो तुम्हारी रूह से मैल कुचैल दूर हो आचार में पवित्रता आ जाए वहीं कपड़ो और शरीर को पाक साफ रखना। ताकि वे अपने फ़ायदे को देखें"[16]। पैदल और सवारियों पर आयें तो कौन से नफे या लाभ पहुंचेंगे। क्या यह परलोक के लाभ होंगे? जी नहीं यह मुसलमानों का एक वार्षिक विश्व सम्मेलन होगा जिसमें हर देश और राष्ट्र के लोग भी होंगे, व्यवसायी भी, दार्शनिक भी होंगे धर्म ज्ञानी भी, सब मिल के बैठ कर मुसलमानों की विश्व समस्याओं पर सोच विचार और उनके समाधान की राह निकालने का अवसर मिलेगा। यह भी देखने का अवसर मिलेगा कि जो पहले फैसले लिए गये थे उन पर अमल हुआ या नहीं! और नहीं हुआ तो क्या मेल जोल की सूरतों का पता चल जायेगा।

निसन्देह ईमान वाले आपस में भाई–भाई हैं, के सिद्धान्त पर कमज़ोरों की मदद और उनके अपने पैरों पर खड़े करने के तरीके ढूंढ़े जायेंगे। अल्लाह ने आदर करने वाले घर, काबा को लोगों के कायम रखने के लिए साधन केन्द्र ठहराया

14 एक सो पांचवा सूरा अल–फील, आयत 6

15 बाईसवां सूरा अल–हज, आयत 29
16 बाईसवां सूरा अल–हज, आयत 28

है''[1]।''काबा'' लोगों के लिए जीवन और शक्ति तथा मुसलमानों के लिए शक्ति तथा मुसलमानों को फायदा पहुंचाने वाले धार्मिक आन्दोलन का केन्द्र है। यहों से उठने वाला प्रत्येक लाभकारी आन्दोलन पुरी दुनिया के चुने लोगों के वार्षिक सम्मेलन के कारण थोड़ी अवधि में हर तरफ फैलाया जा सकेगा। एक दूसरे को निकट से देखने दूसरों के विचार और विश्वास का निकट से अध्ययन करने के कारण ग़लफहमियाँ दूर होंगी भ्रम निवारण होगा। झूटे प्रचाारों द्वारा स्वार्थी तत्व जो भेद भाव डालने की व्यवस्था दी जाती है कोशिश करते हैं, एक दूसरे के विरूद्ध कुफ़ के फतवे अर्थात अनिश्वरवादी होने की व्यवस्था दी जाती है उनकी वास्तविकता जानी जा सकेगी। बहर हाल तात्पर्य यह है कि इस्लाम के शरीर में काबे का स्थान है जो मानव काया में हृदय का। जहां हर तरफ का रक्त जमा होता है उसको बेकार और हानिकारक प्रभावों से पाक किया जाता है और फिर दूर निकट शरीर के प्रत्येक अग तक इस साफ जीवन निधि का उचित बटवारा हो जाता है।

सामूहिक लाभ और युक्तियों से हटकर भी हज के सारे संस्कार अपने भीतर सुधार की बड़ी शक्ति रखते हैं। सब का किसी विशेष स्थान से ''इहराम बांधना[2]'' इहराम के वस्त्र का एक रंग होना सबका एक जबान होकर आसक्ति पूण्र ढंग ''लब्बैक'' अल्लाहुम्मा ''लब्बैक'' कहना और स्वच्छता के साथ अल्लाह के घर पर न्योछावर होना। ''सफा'' और ''मरवा[3]'' के बीच ''सई'' मुजदलिफा मशअरुल हराम[4] में ठहरना शैतानों पर पत्थर बारी मिना में कुर्बानी ग़रज़ हज के संस्कारों में से प्रत्येक संस्कार की युक्तियों की अगर व्याख्या की जाये तो पूरी किताब लिखी जा जा सकता है।

लेकिन यह तभी है जब हज की आत्मा को पहचान कर संस्कार पूरे किये जायें केवल रस्म और मनोरंजन न मान लिया जाये। अन्यथा अगर ग़लत विचारों के साथ हज करके पलटा जा रहा है तो रहा सहा ईमान और इखलाक़ भी काबे से लिपट कर रह जाता और मुसलमानों गैर मुल्की सामान खरीद के आध्यातिमिकता यानी रूहानियत बेचकर पलट आता है।

●●●

रुबाई

मौलवी क़ायम महदी नक़वी साहिर इजतिहादी

घबराएगें दुनिया में जो रहते रहते
उठ जायेंगे या हुसैन कहते कहते
डूबेंगे जो बहरे ग़मे शब्बीर में हम
कौसर पे पहुँच जाएगें बहते बहते

(पेज नं० 16 का बाकिया)

आया और हमारे उलमा में अल्लामा नूरी ने भी 'मुस्तदरकल वसायल में उसे लिखा है।

इन हदीसों में 'क़र्नुश्शैतान' का शब्द है जिसके शाब्दिक अर्थ जो वही है तो हमने अनुवाद में लिखे है अर्थात शैताान की सींग। इसके लिए 'क़ामूस' में है कि 'क़र्नुश्शैतान' और 'कर्नाश्शैतान' अर्थात 'शैतानों का सींग' और शैतान के दोनों सींग ''इसके मायने है उसका समूह, उसके मतावलम्बी या उस की शक्ति और वर्चस्व, अधिपत्व मानो नज्द वाले शैतान के शस्तों की स्थिति में है कि उन्हीं के द्वारा वह हमला करता है और अपने उददेश्य प्राप्त करता है।

इसे इब्ने असीर जज़री ने 'निहाया' में लिखा है। फिर एक हदीस पैग़म्बर की है कि: "ईमान मदीने की ओर पनाह लेता है।

(जारी...)

●●●

17 पांचवा सूरा अल–माइदा, आयत 97

18 इहराम का मतलब है कि हज करने वाला सिली हुई पोशाक उतार दे और बे सिले कपड़े हज की नीयत से धारण कर ले।

19 सफ़ा और मरवा दो पहाड़ियों के नाम हैं जिनके बीच हाजी चक्कर लगाते हैं यह संस्कार ''सई'' कहलाता है।

20 यह दो स्थान हैं जहां मिना से पहले हाजी ठहरते हैं।